Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

सन् सत्तावन की क्रान्ति में कानपुर की स्थिति - ''सत्तीचौरा की घटना एवं बीबीघर नरसंहार के परिप्रेक्ष्य में''

डॉ० जितेन्द्र सिंह[1]

किसी भी घटना की व्याख्या करते समय उस युग विशेष की ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक हो जाता है जिसमें वह घटी। इसीलिए प्रसिद्ध इतिहासकार क्रोचे का मत है,''**सम्पूर्ण इतिहास समसामयिक इतिहास है।**'' यहाँ यह तथ्य भी ध्यातव्य रहे कि आमुख घटना का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाये क्योंकि तभी हमें घटना के वास्तविक स्वरूप एवं उसके प्रभाव की जानकारी हो सकती है। इस सम्बन्ध में सन् 1857 ई0 के विद्रोह की व्याख्या वैज्ञानिक एवं तार्किक आधार पर करते हुए यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि यद्यपि स्थानीय स्तर पर इस विद्रोह का स्वरूप पृथक–पृथक था लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर इसने ब्रिटिश औपनिवेशक शासन की जड़ों को समस्त भारत में हिलाने का शंखनाद किया था।

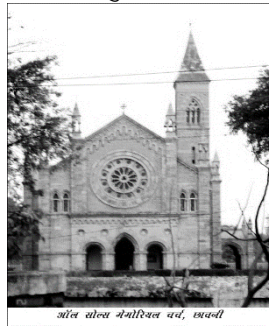

ऑल सोल्स मेमोरियल चर्च, छावनी

मैस्कर घाट, छावनी

प्रस्तुत शोध पत्र में भारत के ''प्रथम स्वंतत्रता संग्राम'' अर्थात् ''सन् 1857 के विद्रोह'' के अन्तर्गत कानपुर से सम्बन्धित कुछ प्रमुख घटनाओं का वर्णन करने का प्रयास किया गया है जिसमें''सत्तीचौरा की घटना'' एवं बीबीघर का नरसंहार'' प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है और यह भी

[1] प्रवक्ता– इतिहास विभाग, जागरण कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइन्स एण्ड कॉमर्स, साकेत नगर, कानपुर

बतलाने का प्रयत्न है कि किस प्रकार औपनिवेशिक इतिहासकारों ने इन घटनाओं का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है।

विद्रोह के पूर्व जिले की परिस्थितियाँ

मेमोरियल वेल गार्डन, नानाराव पार्क, कानपुर

कानपुर के साथ–2 पूरे हिंदुस्तान में ब्रिटिष नीतियों को लेकर अफवाहों व शड्यंत्रों का बाजार गर्म था। सभी समुदाय के लोग इस बात को लेकर आषंकित थे कि कोई विद्रोह जैसी घटना घटने वाली है।[1] इस बात का भी लोगों को पूर्वानुमान था कि किसी ने काफी समय पूर्व भविश्यवाणी की थी कि प्लासी के युद्ध (23 जून, 1757 ई0) के सौ वर्श पष्चात् अंग्रेजी षासन की समाप्ति हो जायेगी।[2] इसी दौरान; बंगाल के किसानों में भी अफवाहें फैल रही थीं कि ''सब कुछ लाल हो जायेगा।''[3] अधिकांष लोग अप्रत्यक्षतया इस अफवाह का अर्थ निकाल रहे थे कि कंपनी सरकार सभी वर्ग एवं जातियों के लोगों को नश्ट करने के लिए प्रयासरत् है तभी उनके रक्त से सब कुछ लाल हो जायेगा।[4] इस प्रकार पूरे हिंदुस्तान में लोग अलग–2 ढंग से किसी अप्रत्याशित घटना घटित होने का अनुमान लगा रहे थे।

इसी बीच, 14 मई 1857 को मेरठ व आगरा जैसे स्थानों में विद्रोह आरंभ होने की खबरें आने लगी थीं। दिल्ली में भी गदर के व्यापक विस्तार की सूचना प्राप्त हुई।[5] जनरल व्हीलर ने परिस्थितियों को अवगत कराने के लिए एक टेलीग्राम लखनऊ स्थित सर हेनरी लारेन्स को भेजा, कि ''कानपुर में सब कुछ षान्त है, लेकिन लोगों में उत्साह है और यहाँ की परिस्थितियाँ अभी कंपनी के नियंत्रण में हैं।''[6] परन्तु षीघ्र ही जनरल के विष्वास की नींव हिल गई। धीरे–2 उसने इस तथ्य को समझ लिया कि सेना में सरकार विरोधी भावनायें तीव्रता से उभर रही हैं जो किसी भी समय भीशण विद्रोह में परिवर्तित हो सकती हैं।[7]

इस प्रकार विद्रोह आरंभ होने के पूर्व कानपुर जिले की परिस्थितियाँ विस्फोटक हो चुकी थीं। यहाँ जनरल नील के क्रूरतम अत्याचारों की सूचनायें निरन्तर प्राप्त हो रही थीं। उसने इलाहाबाद से कानपुर की ओर जीटी रोड के निकटवर्ती गाँवों को उजाड़ने का आदेश दिया था। सर जॉन काए ने अपनी पुस्तक ''ए हिस्ट्री ऑफ दि ग्रेट रिवोल्ट'' में लिखा है कि नील ने इलाहाबाद में मेजर सिडेनहम रेनॉड को आदेश दिया था कि वह ब्रिटिश हुकूमत का प्रदर्शन करते हुए जीटी रोड स्थिति समस्त गाँवो को नष्ट कर दे। इसके साथ ही जनरल नील ने इलाहाबाद में कई कमिश्नरों को अत्याचार जारी रखने और उनका निरीक्षण करने के लिए नियुक्त किया था। 28 जून, 1857 को एक कमिश्नर ने अहंकारवश कहा था कि ''वह हर दिन संक्षिप्त कार्यवाही के बाद आठ–दस लोगों को फाँसी पर लटकता था।''

इसी क्रम में एक अंग्रेज लेखक एण्ड्रयू वार्ड ने अपनी पुस्तक ''अवर बोन्स आ स्कैटर्ड'' में लिखा, ''छठीं देशी पैदल पल्टन के इलाहाबाद से

कानपुर आये सिपाहियों ने नील के अत्याचारों के विषय में बतलाया कि किस प्रकार बाजार लूटे गए, गाँव के गाँव जलाये गए, नील के आदेशानुसार हत्या करने वाले जत्थे फसलों को कैसे जलाते और प्रत्येक आदमी एवं बालकों को पकड़ कर फांसी पर चढ़ा देते थे, स्त्रियों और नवजात शिशुओं को गोली मार दी जाती थी। लेखक ने यह भी कहा है कि शिशुओं को संगीनों से गोद डाला जाता था और महिलाओं के साथ जबर्दस्ती की जाती थी।''[8] यह भी उल्लेखनीय है कि समस्त क्रान्ति के समय एक भी उदाहरण ऐसा नहीं है जिसमें किसी भारतीय ने अंग्रेज महिला के साथ बलात्कार किया हो। दि इण्डियन एम्पायर के लेखक मार्टिन और एडवर्ड रामसन ने यह स्पष्टतया कहा है कि नील द्वारा इलाहाबाद के अत्याचार सतीचौरा की घटना के पूर्व और बीबीघर नरसंहार के दो सप्ताह पूर्व किये गए थे। इस प्रकार सत्तीचौरा और बीबीघर की घटनायें नील के क्रूरतम अत्याचारों की स्वाभाविक प्रक्रिया थी। इस पृष्ठभूमि में निष्पक्ष रूप से यह समझना आवश्यक है कि जल्लाद नील और उसके साथी थे अथवा गंगू, इतवरिया या क्रान्तिकारी थे।

कानपुर के तत्कालीन कलेक्टर मि0 शेरर ने अपने वृत्तान्त ''डेली लाइफ डयूरिंग दि इण्डियन म्यूटिनी'' में कहा है कि '' हर बन्दी को एक पेड़ के नीचे गाड़ी पर पेड़ से बन्दी हुई रस्सी के फन्दे को गले में कसकर खड़ा कर दिया जाता था, जब गाड़ी चलती थी तो वह झूल जाता था।[9] उधर जनरल व्हीलर जिसके पास अंग्रेजी सेना की कमान थी, कुछ अंग्रेज परिवारों की सुरक्षा के लिए एक स्थान तलाश रहे थे, जहाँ इन्हें रखा जा सके। यही स्थान आगे चलकर अस्थाई किले के रूप में प्रसिद्व हुआ, जो छावनी में स्थित था।[10] यद्यपि जनरल व्हीलर ने आंरभ में किले वाले स्थान की अपेक्षा नवाबगंज स्थित मैगजीन वाले स्थान को चुना था, लेकिन मैगजीन में रखे विस्फोटक पदार्थ किसी भी समय फट सकते थे; इसीलिए व्हीलर ने स्थान परिवर्तित किया। किले का क्षेत्रफल 200 वर्ग गज था।[11] किले में स्थित अंग्रेजों की सुरक्षा का प्रभार मेजर विबर्ट, कैप्टन कैम्पलैण्ड, लेफ्टिनेण्ट बर्ने, एक्फोर्ड, लेफ्टिनेण्ट डेम्स्टर और मार्टिन के अधीन था।[12]

22 मई, 1857 ई0 को किले में 750 से 1000 लोग थे, जिनमें 465 पुरूश, उनकी पत्नियाँ और लड़कियाँ मिलाकर 280 लोग तथा षेश छोटे बच्चे थे। किले में स्थित अंग्रेजों को विभिन्न स्तरों पर सुरक्षा का प्रभार सौंपा गया। मेजर विबर्ट द्वितीय घुड़सवार सेना के प्रमुख बनाये गये। इनका साथ कैप्टन जेनकिंग ने दिया। उत्तर–पूर्वी भाग में लेफ्टि. ऐष और सौथबी तैनात थे। पूर्वी भाग में कैप्टन कैम्पलैण्ड और दक्षिण–पूर्वी भाग में लेफ्टि. एक्फोर्ड, बर्ने व डेलफॉस थे। उत्तरी भाग में लेफ्टि. डेम्स्टर व मार्टिन थे। किले के सामान्य पर्यवेक्षण का कार्य मेजर लार्किन्स के अधीन था, जो कि अस्वस्थ होने के कारण नहीं आ पाये।[13]

26 मई, 1857 ई0 को किले में छिपे हुए कुछ परिवारों को अवध घुड़सवार सेना की द्वितीय रेजीमेण्ट के संरक्षण में जी0 टी0 रोड से फर्रूखाबाद की ओर ले जाया गया।[14] लेकिन कुछ दूर जाने के पष्चात् करौली

में इनकी हत्या कर दी गई। इनमें से एक ने किसी तरह भागकर 1 जून, 1857 ई0 को जनरल व्हीलर को सूचित किया।[15]

विद्रोह का आरम्भ

एक बहुत बड़े अन्तराल के बाद 4 जून की मध्यरात्रि अथवा 5 जून की प्रातः कानपुर में विद्रोह का आरम्भ हुआ। इस विद्रोह की षुरूआत द्वितीय इण्फैण्ट्री के भारतीय सिपाहियों ने की। ऐसा माना जाता है कि सूबेदार टीका सिंह, जो उस समय अपने सिपाहियों के साथ था, के माध्यम से किये गए एक संकेत के द्वारा विद्रोह षुरू हुआ। इसी बीच जनरल इवार्ट ने सिपाहियों को इतना घिनौना कार्य न करने की सलाह दी, किंतु सिपाहियों ने उसकी सलाह पर कोई ध्यान नहीं दिया। इन सिपाहियों ने छावनी में आग लगा दी और बंदूके दागीं। तत्पष्चात् उन्होंने घुड़सवार सेना के साथ नवाबगंज स्थित सरकारी खजाने तथा षस्त्रागार (जिसमें हथियार रखे हुए थे) की ओर प्रस्थान किया।[16]

कानपुर नगर में विद्रोह आरम्भ होने का हरा झण्डा फहराया गया। नाना साहब के लालपुरी नामक समर्थक ने एक हाथी पर बड़ा झण्डा लगाया। उसने सारे षहर में घूमकर अंग्रेजी राज्य की समाप्ति तथा नाना साहब का षासन आरम्भ होने की घोशणा की। दोपहर को विद्रोही सिपाही नवाबगंज में एकत्र हुए।[17] विद्रोहियों ने नवाबगंज स्थित सरकारी खजाना तथा षस्त्रागार लूटा। खजाने के स्ट्रांग रूम से एक लाख रूपये मिला, जिसे चार रेजीमेण्ट में बांट दिया गया।[18]

6 जून की प्रातः नाना के नेतृत्व में विद्रोही सिपाहियों ने नवाबगंज में मैगजीन के पास स्थित अस्थाई किले पर हमला कर दिया। ज्ञात रहे कि यह किला आरंभ में नवाबगंज में था , किन्तु बाद में, सुरक्षा की दृष्टि से इसे छावनी में स्थानांतरित किया गया था। इस किले में लगभग एक हजार अंग्रेज स्त्री–बच्चे षरणार्थी के रूप में ठहरे हुए थे।[19] जनरल व्हीलर ने इन लोगों को आत्मरक्षा के लिए संगठित किया था। किले पर हमला करने से पूर्व नाना साहब ने 12 घण्टे का नोटिस भेजकर जनरल को सचेत भी किया था। नोटिस पाकर जनरल स्तब्ध रह गया। उसने सोचा था कि विद्रोही सिपाही दिल्ली की ओर जा चुके हैं। अतः अब वह जलमार्ग से इलाहाबाद के लिए अंग्रेज स्त्री–बच्चों सहित सुरक्षित निकल सकता है। जनरल की योजना विफल रह गई और विद्रोहियों ने किले पर आक्रमण कर दिया। 21 दिनों तक नाना की तोपें किले पर गोला बरसाती रहीं।[20]

मि0 शेरर ने अंग्रेजों की दशा का वर्णन करते हुए कहा कि ''उस किले में हथियार, खजाना एवं ब्रिटिश सैनिक काफी संख्या में थे। विद्रोही सिपाही निरन्तर गोलाबारी करते हुए आगे बढ़ रहे थे जिससे किले के अन्दर महिलायें एवं बच्चे काफी भयभीत थे; यहाँ तक कि जिन्दा तक जल गये थे।''[21]

अंग्रेजों ने भी इस हमले का जवाब दिया। नाना ने 7 जून को हिन्दी व उर्दू में एक फरमान जारी करके धर्म की रक्षा के नाम पर नागरिकों से

सहयोग की अपील की। नाना साहब ने नागरिक प्रषासन चलाने की व्यवस्था की। कानपुर के प्रमुख नागरिकों की राय से हुलास सिंह को षहर कोतवाल तथा चीफ मजिस्ट्रेट बनाया गया।[22]

9 जून को 7 नम्बर रिसाले तथा 48वीं देषी पल्टन की दो कंपनियों ने, जो उस समय चौबेपुर में पड़ाव डाले खड़ी थीं, अपने सभी अंग्रेज अफसरों को मार डाला। केवल लेफ्टिनेण्ट बोल्टन नामक एक अफसर बचा जिसने कानपुर स्थित किलेबन्दी में षरण ली। उसी दिन फतेहगढ़ से 60–70 अंग्रेज पुरूश, स्त्रियाँ एवं बच्चे नाव पर गंगा से होते हुए नवाबगंज पहुँचे, जहाँ उन सभी की हत्या कर दी गई।[23]

23 जून तक काफी लोग मारे जा चुके थे। किले की दषा अत्यंत भयावह हो चुकी थी। अवध से विद्रोहियों की सहायता के लिए नादिरी और अख्तरी रेजीमेण्ट आयी। किले को चारों ओर से घेर लिया गया था जिसमें आजमगढ़ की 17वीं नेटिव इण्फैण्ट्री, सचेण्डी, नर व षिवराजपुर के हजारों राजपूत षामिल थे। विद्रोहियों का उद्देष्य अंग्रेजों को किले से बाहर निकालना था।[24] अंततः 25 जून को जनरल ने किले के अन्दर से षांति का झण्डा फहराकर आत्मसमर्पण कर दिया। नाना ने गोलाबारी बन्द करने का आदेष दिया।[24] इस प्रकार क्रान्ति की बागडोर नाना ने अपने हाथ में ले ली। 26 जून को नाना साहब की ओर से अजीमुल्ला खाँ व ब्रिगेडियर ज्वाला प्रसाद तथा अंग्रेजों की ओर से कैप्टन मुरे व कैप्टन व्हीटिंग के मध्य हुए एक समझौते के तहत् अंग्रेजों को 40 बड़ी नौकाओं द्वारा 27 जून की प्रातः सत्तीचौरा घाट से इलाहाबाद भेजे जाने की व्यवस्था की गई।[26] किंतु षर्त यह थी कि अंग्रेज किले में स्थित खजाना, तोपखाना आदि विद्रोहियों को सौंप दें, जिस पर अंग्रेज सहमत हो गए।[27]

सत्तीचौरा घाट की दुर्घटना

अल्प समय में सत्तीचौरा घाट पर नावों का प्रबन्ध व व्यवस्था के लिए तात्या टोपे को नियुक्त किया गया। तात्या ने तत्कालिक षहर कोतवाल हुलास सिंह के माध्यम से सत्तीचौरा घाट के नाविकों एवं मल्लाहों द्वारा उपलब्ध कराई गई 40 बड़ी देषी नौकाओं की व्यवस्था की।[28] 24, जून 1857 ई0 की सुबह अंग्रेजों का पलायन देखने के लिए कानपुर के नागरिक भी घाट पर एकत्र हो गये थे।[29] वहीं घाट के निकट स्थित हरदेव मन्दिर पर अजीमुल्ला खाँ, तात्या टोपे* तथा बाला साहब भी बैठे थे। अंग्रेजों के पलायन के अवसर पर इलाहाबाद व वाराणसी से लौटे हुए कुछ सिपाहियों को तात्या टोपे ने सतर्कतावष घाट पर लगा रखा था। इन सिपाहियों के परिवारों के साथ अंग्रेजों ने काफी अत्याचार किये थे। ये सभी सिपाही विद्वेश की भावना से परिपूर्ण थे।[30]

जैसे ही अंग्रेजों का काफिला नावों से चलने के लिए तैयार हुआ, घाट पर स्थित भीड़ में से किसी व्यक्ति ने बिगुल बजा दिया। फलस्वरूप नावों

को खेने वाले मल्लाह नाव छोड़कर पानी में कूदकर किनारे आने लगे। नावों में सवार स्त्री–बच्चों में भय व्याप्त हो गया। अंग्रेजों ने मल्लाहों पर गोलियाँ चलानी षुरू कर दीं; जवाब में घाट पर तैनात सिपाहियों ने भी गोलियाँ चलानी षुरू कर दीं। चारों ओर भगदड़ मच गई। कोई डूब गया, किसी को गोली लगी, कोई तैरने लगा। परिणामस्वरूप, काफी अंग्रेज मारे गए, नाव में आग लगने के कारण काफी स्त्रियाँ व बच्चे जो नावों से कूदे थे, वे भी पानी में डूब गये। उस समय नाना साहब सवादा कोठी से अंग्रेजों को विदाई दे रहे थे। नाना साहब को इस घटना की खबर लगते ही, उन्होंने तुरन्त दूत भेजकर इस हत्याकाण्ड को बन्द करवाया।[31]

नाना साहब के आदेष से 125 अंग्रेज सत्रियों एवं बच्चों को बचा लिया गया तथा उन्हें बन्दियों के रूप में सवादा कोठी में रखा गया।[32] इन अव्यवस्थाओं के बीच एक नाव बचकर भाग निकली। इसमें मॉब्रे थॉमसन, मूर, डेलफॉस आदि अंग्रेज थे। यह जग जाहिर है कि हिन्दुस्तानी स्वभाव अहिंसक होता है। तभी एक नाव जो सत्तीचौरा घाट से बच निकली थी, उसे दृगविजय सिंह द्वारा शरण दी गई और एक माह तक अपने यहाँ रखकर सुरक्षित इलाहाबाद भेजा गया। यह वही नाव थी जिससे भागते हुए निःशस्त्र मल्लाहों पर गोलियाँ चलाई गईं थी। प्रतिक्रियास्वरूप स्थानीय सिपाहियों ने भी गोलियाँ चलाईं जिससे एक गोली मूर को लगी और वह तत्काल मर गया। विद्रोहियों ने एक दूसरी नाव द्वारा उनका पीछा किया[33] तथा 30 जून को इन्हें पकड़कर लाया गया। नाव पर सवार स्त्री एवं बच्चों को सवादा कोठी भेज दिया गया। सवादा कोठी में हैजा और पेचिष फैल जाने के कारण वे सब बीबीघर स्थानान्तरित कर दिये गये। इस जघन्य हत्याकाण्ड के कारण अंग्रेजों ने सत्तीचौरा घाट का नाम ''मैस्कर घाट'' रखा। इस घटना की याद में हरदेव मन्दिर के चबूतरे पर अंग्रेजों ने एक मेमोरियल क्रॉस का निर्माण कराया था। ऐसा कहा जाता है कि अंग्रेजों ने इस घटना के प्रतिषोध में सत्तीचौरा घाट पर ब्रिगेडियर ज्वाला प्रसाद को 31 मई, 1860ई0 को फाँसी दी तथा इसी स्थान पर समाधान, बुद्धू चौधरी व लोचन मल्लाह, जिन्होंने नावें उपलब्ध करायी थीं, उनको भी फाँसी पर लटका दिया।[34]

बीबीघर में नरसंहार

बीबीघर एकमंजिली वह इमारत थी, जिसमें 27 जून से 15 जुलाई, 1857 तक नानाराव पेषवा ने लगभग 200 अंग्रेजों को बन्दी बनाकर रखा था, जिसमें फतेहगढ़ के 3 बड़ा साहब (अधिकारी), 73 महिलायें एवं 124 युवा बच्चे थे।[35] इन बन्दियों को सत्तीचौरा घाट से बचाकर लाया गया था। बीबीघर एक अंग्रेज अफसर द्वारा अपनी प्रेमिकाओं को ठहराने के लिए बनवाया गया था। बीबीघर छावनी में उस स्थान पर था, जहाँ आज नानाराव पार्क (तात्या टोपे मेमोरियल गार्डन) में तरणताल के आस–पास का स्थान है।[36] कानपुर में अपनी विजय पताका फहराने के लिए जनरल हैवलाक इलाहाबाद से सड़क मार्ग द्वारा अपनी सेना लेकर चल पड़ा। 15 जुलाई, 1857 ई0 को जनरल हैवलाक की फौजें जब पाण्डु नदी पार कर चुकी थीं तथा कानपुर के करीब आने लगीं; तब नानाराव पेषवा ने अपने सलाहकारों से परामर्ष किया

कि जनरल की बढ़ती हुई फौज को तत्काल रोका जाये।[37] बीबीघर में बन्द अंग्रेज महिलाओं की देखभाल करने का काम बेगम हुसैनी खानम को सौंपा गया था। यह बाजीराव पेषवा के आश्रय में रहती थी। उनकी मृत्युपरान्त वह पेषवा के परिवार के संरक्षण में रही। यह अंग्रेजों की कट्टर षत्रु थी। उसने पहरेदारों से अंग्रेज महिलाओं और बच्चों को कत्ल कर देने के लिए कहा। लेकिन पहरेदारों द्वारा मना करने पर वह इस पाषविक काम के लिए 16–17 जुलाई, 1857 की रात गंगू मेहतर, इतवरिया तथा कुछ अन्य कसाइयों को ले आई जिन्होंने बीबीघर में स्थित कैदियों का कत्ल कर दिया। अगले दिन सुबह उनकी लाषें बीबीघर में बने एक कुयें में डाल दी गई।[38]

अंग्रेजों द्वारा बीबीघर में पुनः अधिकार करने के उपरान्त इसे गिरा दिया तथा बीबीघर के मैदान में बने कुयें को ''मेमोरियल वेल'' का नाम दिया गया। इस कुयें के चारों ओर रेलिंग लगाकर बीच में संगमरमर के पत्थर का क्रॉस लगाया गया। स्वतंत्रता के पष्चात् इस क्रॉस को मेमोरियल वेल से हटाकर ''ऑल सोल्स चर्च'' में रखवा दिया गया।[39]

अंग्रेजों ने इस नरसंहार का बड़ा ही वीभत्सपूर्ण वर्णन किया। उन्होंने लिखा है कि बीबीघर के प्रांगण में खून ही खून था। साथ ही जल्लादों ने दो बच्चों, जो प्रांगण में खेल रहे थे, को पकड़कर उनका भी कत्ल कर दिया और उनके शवों को पेड़ पर लटका दिया। बीबीघर की घटना के दूसरे दिन अर्थात 18 जुलाई को कानपुर के अंग्रेज कलेक्टर मि0 शेरर ब्यूस बीबीघर का निरीक्षण करने गये। उन्होंने इस घटना को अतिशयोक्तिपूर्ण बतलाया। शेरर ने अपनी कृति **हैवलाक्स मार्च टू कानपुर** में स्पष्ट रूप से कहा है कि सारा वृतान्त बहुत बढ़ा– चढ़ाकर कहा गया है।

इस सम्बन्ध में शेरर के तीन लेख हैं– एक तो उसका वृत्तान्त (His Account), दूसरा **हैवलाक्स मार्च टू कानपुर** और तीसरा 13 जुलाई 1859 की उनकी रिपोर्ट है जो उसने इलाहाबाद के कमिश्नर मिस्टर थार्नहिल को भेजी थी। इन तीनों में उसने नरसंहार को असत्य कहा है। 1857 की घटना के बाद नार्थ–वेस्ट प्रॉविन्सेस के मिलिट्री सेक्रेटरी और पुलिस कमिश्नर लेफ्टि0 कर्नल विलियम्स ने विद्रोह के शान्त होने के बाद इस हत्याकाण्ड की जॉच की और इसकी रिपोर्ट 29 मार्च को भेजी। इसके समक्ष कुल 63 गवाहियाँ हुईं। गवाहों में सभी ने इस हत्याकाण्ड को असत्य बतलाया।

जो भी हो, इतना तो निश्चित है कि औपनिवेशिक इतिहासकारों ने इस घटना का बढ़ा–चढ़ाकर वर्णन किया है; जैसा कि बंगाल के संदर्भ में कालकोठरी की घटना (Black Hole Tragedy)** का वृतान्त प्रस्तुत किया गया था। बीबीघर हत्याकान्ड की घटना तो हुई लेकिन इसमें इतनी वीभत्सता नहीं थी, जितना कि नील द्वारा बनारस तथा इलाहाबाद में कराया गया व्यापक नरसंहार। इस क्रूरतम नरसंहार को उन सैनिकों ने अपनी आँखों से देखा था, जो सत्तीचौरा की घटना से पूर्व कानपुर आये थे। उनके सगे–सम्बन्धी और साथी बर्बरतापूर्वक मार दिये गये थे। स्वाभाविक रूप से इन लोगों में अंग्रेजों के विरूद्ध प्रतिशोध की भावना थी। सत्तीचौरा की घटना

इस प्रतिशोध का परिणाम थी। **आनन्द स्वरूप मिश्र** ने इस संदर्भ में लिखा है कि ''यह अभिलेखों में दर्ज है कि तात्या टोपे ने लोगों से उन यूरोपियन्स को न मारने के लिए कहा था क्योंकि वे उनकी दया पर थे किन्तु किसी ने उनकी न सुनी। वाराणसी और इलाहाबाद में अंग्रेजों के अत्याचारों से वे बहुत अधिक उत्तेजित थे।''[40]

इस प्रकार ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियाँ, एवं उनका अनुपालन तथा इससे उत्पन्न असंतोष ने स्थानीय सिपाहियों व कानपुर जिले की जनता की मनः स्थिति को झकझोर कर रख दिया, जिसकी परिणति थी– **सत्तीचौराघाट की घटना एवं बीबीघर का हत्याकाण्ड।** इसके साथ ही उनमें ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने की प्रबल भावना थी जिसके कारण सन् सत्तावन की क्रान्ति का बिगुल कानपुर में फूँका गया था।

सन्दर्भ सूची

1. ट्रैवेलियन; जी0ओ0, **कानपोर,** लंदन, 1860, पृ0–70–71
2. वही; पृः–71–72
3. वही; पृः–72
4. वही; पृः–73
5. वही, पृष्ठ–75 एवं मिश्रय आनन्द स्वरूप, **नाना साहब पेशवा एण्ड दि फाइट फॉर फ्रीडम** लखनऊ, 1961 पृष्ठ–220
6. वही; पृ– 75 एवं मिश्र, ए0 एस0; पृ – 220
7. ट्रैवेलियन; पृ– 76 एवं हर्डीकर; श्रीनिवास बालाजी, **नानासाहब पेशवा,** दिल्ली, 1969, पृ– 91
8. वार्ड्स, एण्ड्रयूय **अवर बोन्स आर स्कैटर्ड**, न्यूयार्क, 1996 (प्रथम संस्करण), पृ0: 343
9. शेरर, जे0 डब्ल्यू, **डेली लाइफ ड्यूरिंग दि इण्डियन म्यूटिनी,** लीजेण्ड पब्लिकेशन, लंदन 1910 पृ0–56
10. मिश्र, ए0 एस0; पृ– 224
11. ट्रैवेलियन, जी0ओ0, पृ0 82–83 एण्ड एट्किंसन, ई0टी0य **स्टैटिस्टिकल, डिस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाउण्ट्स ऑफ नॉर्थ–वेस्टर्न प्रॉविन्सेज ऑफ इण्डिया,** भाग–टप इलाहाबाद, 1881,पृ0 166. तथा 169
12. एट्किंसन पूर्वोध्रत, पृ0 171.
13. ट्रैवेलियन, पूर्वोध्रत, पृ0–118
14. मिश्र, ए.एस..पूर्वोध्रत, पृ0–225
15. एट्किंसन, पूर्वोध्रत, पृ0–167.
16. मिश्र, ए0एस0, पूर्वोध्रत पृ0–226 एवं फॉरेस्ट, जी0 डब्ल्यू, **ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन म्यूटिनी**, 1857–58, भाग–1, पृ0–415.
17. हर्डीकर, श्रीनिवास बालाजी, पूर्वोध्रत, पृ0 99
18. **परिक्रमा, कानपुर नगर**, जिला सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, 2004 पृ0–5.
19. मिश्र, ए0एस0, पूर्वोध्रत पृ0 229–30.
20. हर्डीकर, पूर्वोध्रत पृ0–103. एवं फारेस्ट, जी0डब्ल्यू, पूर्वोध्रत पृ0–424–25.
21. थॉमसन, कैप्टन मॉब्रे, **दि स्टोरी ऑफ कानपोर,** लंदन, 1859, पृ0–66 एवं मिश्र, ए.एस. पूर्वोध्रत पृ0–232.
22. मिश्र ए.एस. पूर्वोध्रत पृ0–230 एवं परिक्रमा पृ0 –7.
23. **परिक्रमा, कानपुर नगर**, जिला सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, 2004 पृ0–6. एवं एट्किंसन, पूर्वोध्रत, पृष्ठ–176।
24. एट्किंसन, पृ0–178 तथा 180
25. मिश्र ए.एस. पूर्वोध्रत पृ0–233 एवं परिक्रमा, पृ0 –7.

26. थॉमसन, कैप्टन मॉब्रे, पूर्वोध्रत पृ0–160, हर्डीकर, पूर्वोध्रत, पृ0–109–10 एवं मिश्र, ए0एस0, पूर्वोध्रत, पृ0–233
27. एट्किंसन, पृ0–180.
28. वहीय पृ0–181–82.
29. हर्डीकर, पूर्वोध्रत पृ0–112.
    * इनके अतिरिक्त नन्दीदीन और जगन्नाथ भी थे। यद्यपि हुलास सिंह ने इस बात से इन्कार किया कि वह घाट पर नहीं था, लेकिन वह भी उपस्थिति था। हुलास सिंह एक सतर्क पुलिस अधिकारी की भाँति घाट पर नावों और मल्लाह की व्यवस्था करने में लगा हुआ था, साथ ही वहाँ उपस्थित भारी भीड़ को भी नियंत्रित कर रहा था ख(स्रोतः– थॉमसन, कैप्टन मॉब्रे, पूर्वोध्रत, पृ0 165–166 एवं वार्ड्स, एण्ड्रयू:– **अवर बोन्स आर स्कैटर्ड,** (न्यूयार्क, 1996) पृथम संस्करण पृ0–319–20.,
30. एट्किंसन, पूर्वोध्रत, पृ0–181–82 एवं हर्डीकर, पूर्वोध्रत, पृ0–113
31. एट्किंसन, पृ0–182–184 एवं थॉमसन, कैप्टन मॉब्रे, पूर्वोध्रत, पृ0 209–210.
32. हर्डीकर, पूर्वोध्रत, पृ0–114.
33. थॉमसन, कैप्टन मॉब्रे, पूर्वोध्रत, पृ0 166–171 एवं हर्डीकर, पूर्वोध्रत, पृ0–115.
34. एट्किंसन, पृ0–183–184 एवं परिक्रमा, कानपुर नगर, पूर्वोध्रत, पृ0–7
35. वार्ड्स, एण्ड्रयू, पूर्वोध्रत, पृ0–408.
36. परिक्रमा, कानपुर नगर, पृ0–11 एवं हर्डीकर, पूर्वोध्रत, पृ0–150
37. परिक्रमा, कानपुर नगर, पृ0–11
38. थॉमसन, कैप्टन मॉब्रे, पूर्वोध्रत, पृ0–215 एवं हर्डीकर, पूर्वोध्रत, पृ0–152.
39. हर्डीकर, पूर्वोध्रत, पृ0–152.

    ** **काल कोठरी की घटना** का वर्णन **मि0 हॉलवेल** ने **Alive the wonder** नामक पुस्तक में किया है, जो स्वयं एक कैदी था। उसके अनुसार, ''बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के निर्देशानुसार 146 अंग्रेज कैदियों को 18 फुट लम्बे और 14 फुट चौड़े कमरे में 20 जून, 1856 ई0 को भीषण गर्मी में बन्द कर दिया गया था। तीन दिन पश्चात अर्थात 23 जून, 1856 ई0 को इसमें मात्र 23 व्यक्ति ही जिन्दा बचे। शेष की दम घुटने से मृत्यु हो गई।'' औपनिवेशिक इतिहासकारों ने इस घटना की सत्यता को प्रमाणिक करते हुए नवाब को अत्यधिक क्रूर बतलाया य जबकि भारतीय इतिहासकारों ने इसे हॉलवेल की कपोल–कल्पना कहा क्योंकि इतने सारे व्यक्तियों को इस छोटे से कमरे में बन्द नहीं किया जा सकता था। यह केवल अंग्रेजों द्वारा नवाब को बदनाम करने की साजिश थी। स्रोत : **रॉबर्ट्स, पी0ईय हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इण्डिया लंदन, 1921, पृ0–138–140**
40. मिश्र, ए0एस0, पूर्वोध्रत, पृ0–237.